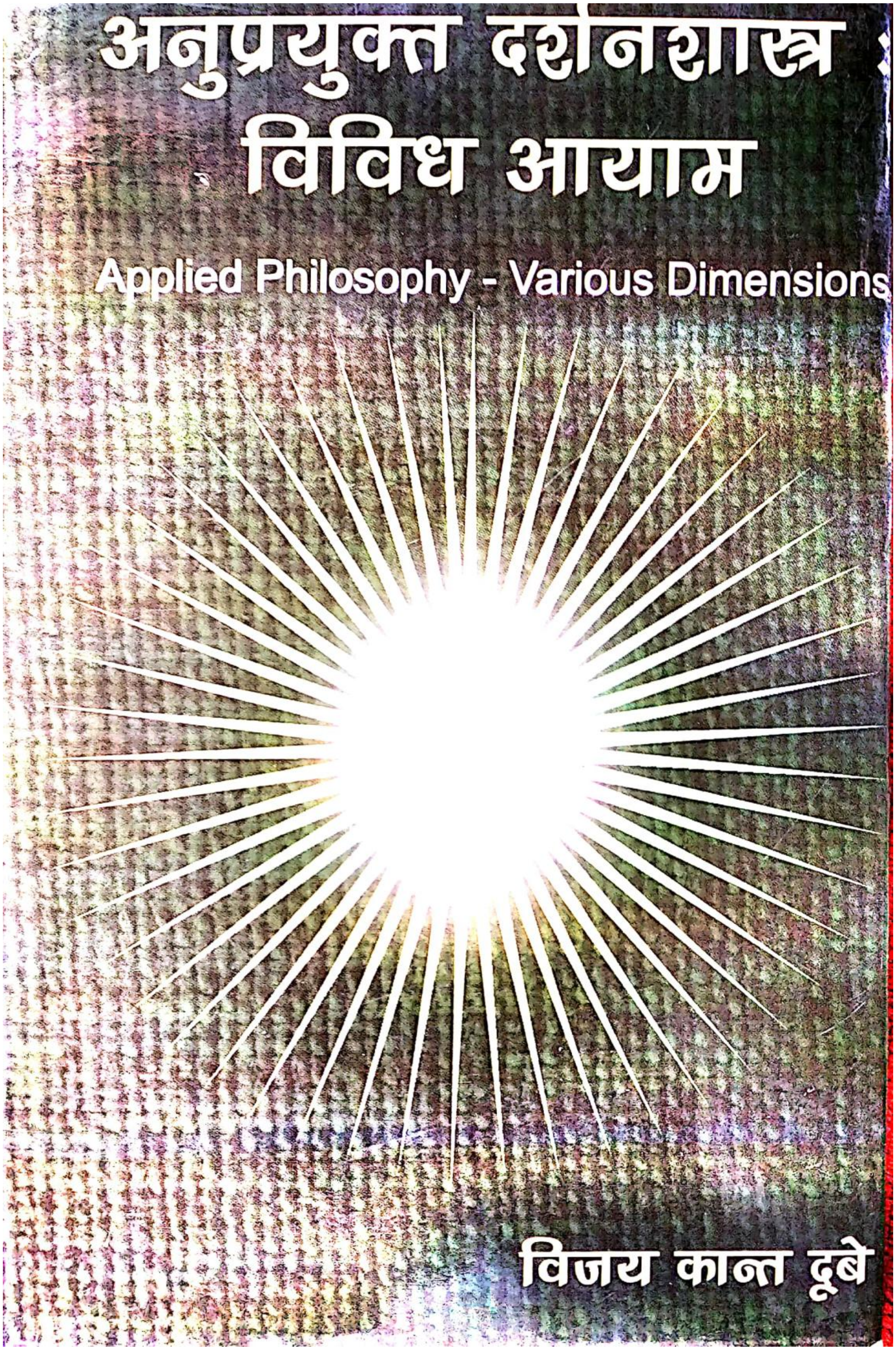

ISBN : 978-81-8315-287-7

1

व्यावसायिक नीतिशास्त्र : एक समीक्षा

अखिलेश्वर प्रसाद दुबे

नैतिकता और मूल्यों का परस्पर सम्बन्ध है। एक के अभाव में दूसरे की सार्थकता की कल्पना नहीं की जा सकती। यद्यपि भारतीय दर्शन में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक दृष्टि से नवीन है क्योंकि 'मूल्य' शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, धर्मग्रन्थों में उस अर्थ में 'शील' शब्द का प्रयोग किया गया है। चूँकि मूल्यों का सीधा सम्बन्ध नैतिकता से है और नैतिकता का सम्बन्ध नीतिशास्त्र से, तो नैतिकता का संक्षिप्त अर्थ जानना यहाँ अप्रासांगिक नहीं होगा। नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की वह शाखा है जो मनुष्य के आचरण, व्यवहार का अध्ययन कर यह निर्देशित करती है कि क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? क्या शुभ है? क्या अशुभ है? क्या उचित है? क्या अनुचित है? आदि। ऐसा इसलिए क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिकता के नाते उसके आचरण एवं व्यवहार से समाज प्रभावित होता है। इसलिए नैतिकता का सीधा सम्बन्ध मूल्यों से हो जाता है। वे सभी मूल्य जो मानवोपयोगी हैं और अच्छाई या शुभ से सम्बन्धित हैं, उन्हें नैतिक मूल्यों की श्रेणी में रखा जाता है। यह स्थापना गलत न होगी कि नैतिक मूल्यों का समन्वय ही सामाजिक मूल्यों की संरचना है। किसी समाज की सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए मानवीय मूल्यों की सर्वाधिक महती भूमिका है। मूल्य नैतिक शिक्षा की ऐसी संस्था है जो सभ्यता, परम्परा, संस्कृति या सद्व्यवहार द्वारा पोषित तथा आत्मचेतना द्वारा संरक्षित होती है।[1] इस प्रकार नैतिक सूत्र एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होते हैं। अतः ये संस्कार रूप हैं और परम्परा से आगे बढ़ते हुए ये सांस्कृतिक विरासत बनते हैं।